

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ चौहत्तर

भविष्यवाणी-संबंधी अंतर्दृष्टियाँ और ईश्वरीय प्रकाशन: दानियेल के दर्शन को समझना और उसके अंतकालीन निहितार्थ

Jeff Pippenger

2024-04-04

जब हम तीसरे प्रतिनिधि युद्ध पर विचार करते हैं, जिसका निरूपण तेरहवीं से पंद्रहवीं पदों में किया गया है, तब हम अपने आप को स्मरण कराएँगे कि इन पदों तक पहुँचने से पहले क्या कुछ घटित हो चुका है। दसवें अध्याय में, दानियेल अपनी अंतिम दर्शन-प्राप्ति करता है, और ऐसा करते हुए वह आंतरिक तथा बाह्य, दोनों प्रकार के भविष्यवाणी-संबंधी दर्शनों को समझने वाला ठहराया जाता है। इब्रानी शब्द “dabar,” जिसका अर्थ “वचन” है, का अनुवाद “thing” किया गया है। नौवें अध्याय में, जब जिब्राईल दानियेल को तेईस सौ दिनों के दर्शन का अर्थ समझाने आया, तब इब्रानी शब्द “dabar” का अनुवाद “matter” किया गया था।

हाँ, जब मैं प्रार्थना में बोल ही रहा था, तभी स्वयं वही पुरुष गब्रिएल, जिसे मैंने आरम्भ में दर्शन में देखा था, शीघ्र उड़ता हुआ संध्या की भेंट के समय आकर मुझे छू गया। और उसने मुझे सूचित किया, और मुझसे बातें कीं, और कहा, हे दानियेल, मैं अब तुझे बुद्धि और समझ देने आया हूँ। तेरी विनितियों के आरम्भ ही में आज्ञा निकली, और मैं तुझे दिखाने आया हूँ, क्योंकि तू अत्यन्त प्रिय है; इसलिए उस विषय को समझ, और दर्शन पर विचार कर। दानियेल 9:21-23.

जब गब्रिएल ने दानियेल से कहा, “उस बात को समझ, और दर्शन पर विचार कर,” तब इब्रानी शब्द “biyn” का अनुवाद “समझ” और “विचार कर” — दोनों रूपों में किया गया। इस शब्द का अर्थ है मानसिक रूप से पृथक करना। गब्रिएल ने दानियेल को सूचित किया कि वह “dabar”, जिसका अनुवाद “बात” किया गया है, और “mareh”, जिसका अनुवाद “दर्शन” किया गया है, इनके बीच मानसिक भेद करे। उन तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी के विषय में गब्रिएल जो व्याख्या दानियेल को दे रहा था, उसे समझने के लिए दानियेल को उस भविष्यसूचक दर्शन के बीच का भेद पहचानना था जो “बात” के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और “mareh” भविष्यसूचक दर्शन के बीच। “बात”, जो “dabar” है, जिसका अर्थ वचन है, भविष्यवाणी की बाह्य रेखा का प्रतिनिधित्व करती है, और “mareh” दर्शन भविष्यवाणी की आंतरिक रेखा का प्रतिनिधित्व करता है।

दानियेल के दसवें अध्याय में, भविष्यवाणी के विद्यार्थी के सामने प्रकट होने वाला पहला सत्य यह है कि दानियेल उन परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो अंत के दिनों में हैं और जो भविष्यवाणी की आंतरिक और बाहरी धाराओं को समझते हैं।

फारस के राजा कुसू के राज्य के तीसरे वर्ष में दानियेल पर, जिसका नाम बेल्तशस्सर रखा गया था, एक बात प्रकट की गई; और वह बात सत्य थी, परन्तु नियत समय दीर्घ था; और उसने उस बात को समझा, और उस दर्शन की समझ उसे प्राप्त हुई। दानियेल 10:1.

“वस्तु” के लिए इब्रानी शब्द “दाबार” है, और “दर्शन” “मरेह” दर्शन है। एक भविष्यद्वक्ता के रूप में, दानियेल परमेश्वर की अंतिम दिनों की प्रजा का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी सिद्धतम परिपूर्ति एक लाख चवालीस हजार हैं। कूरेश का तीसरा वर्ष दानियेल को उस सुधार-रेखा में स्थापित करता है, जो 1989 में अंत के समय पर आरम्भ हुई थी। “उन दिनों” में, जो 1989 से लेकर संयुक्त राज्य में शीघ्र आने वाले रविवार-विधि के इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं, दानियेल तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। एक लाख चवालीस हजार की सुधार-रेखा में, यह शोक का काल उन साढ़े तीन दिनों को चिह्नित करता है, जिनमें प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह के दो साक्षी सड़क पर मरे पड़े हैं। उस बड़े नगर की सड़क, जो सदोम और मिस्र कहलाता है, जहाँ हमारा प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था, वही

यहजकेल की सूखी हड्डियों की मरी हुई तराई भी है।

दसवें अध्याय में, दानिय्येल मसीह की छवि में रूपांतरित हो जाता है, और गब्रिएल द्वारा दानिय्येल के देखे हुए दर्शन की व्याख्या करने से पहले उसे तीन बार स्पर्श किया जाता है। उस दर्शन ने उपासकों के दो वर्गों के बीच विभाजन उत्पन्न किया। अनन्त सुसमाचार हमेशा उपासकों के दो वर्ग उत्पन्न करता है। दानिय्येल उन उपासकों के वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसे एक लाख चवालीस हजार के रूप में दर्शाया गया है, इसके विपरीत उस वर्ग के जो दर्शन से भयभीत होकर भाग गया।

दसवें अध्याय से पहले, गब्रिएल दर्शन की व्याख्या करने के लिए दानिय्येल के पास तीन बार आया। उसने अध्याय सात और आठ के दर्शनों की व्याख्या की, जो बाइबल की भविष्यवाणी के राज्यों को उनके राजनीतिक स्वरूप (अध्याय सात) और धार्मिक स्वरूप (अध्याय आठ) दोनों में दर्शाते थे। फिर अध्याय नौ में गब्रिएल ने तेईस सौ-वर्षीय भविष्यवाणी की व्याख्या की। अध्याय दस में गब्रिएल उस व्याख्या को पूरा करने आता है जो अध्याय नौ में अधूरी रह गई थी, और दानिय्येल को उस दर्शन की व्याख्या देने के लिए, जिससे उपासकों के दो वर्ग उत्पन्न हुए थे। चौदहवीं आयत में गब्रिएल सबसे पहले दानिय्येल को दर्शन का एक सामान्य अवलोकन प्रदान करता है।

अब मैं तुझे यह समझाने आया हूँ कि अन्त के दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगा; क्योंकि यह दर्शन अभी भी बहुत दिनों के लिए है। दानिय्येल 10:14.

मसीह का वह दर्शन, जिसने उपासकों को दो वर्गों में विभाजित किया, यह दर्शाता है कि अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा पर क्या घटेगा। अध्याय सात और आठ की व्याख्या बाइबल-भविष्यवाणी में बताए गए राज्यों के उत्थान और पतन से प्रदर्शित इतिहास की व्याख्या थी, जैसा कि क्रमशः शिकारी पशुओं और पवित्रस्थान के पशुओं द्वारा चित्रित किया गया है। अध्याय नौ की व्याख्या तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी के भीतर दर्शाई गई विभिन्न भविष्यसूचक अवधियों का विस्तृत विभाजन थी। किसी प्रकार अध्याय दस में महिमामय मसीह का दर्शन यह दर्शाता था कि अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा पर क्या घटेगा। महिमामय मसीह के दर्शन की व्याख्या अर्थात् इतिहास की विस्तृत रूपरेखा आरंभ करने से पहले, गैब्रियल दानिय्येल को याद दिलाता है कि वह पहले ही बता चुका है कि यह व्याख्या क्या दर्शाती है।

तब उसने कहा, क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास क्यों आया हूँ? और अब मैं फ़ारस के प्रधान से लड़ने के लिए लौट जाऊँगा; और जब मैं निकल जाऊँगा, तो देखो, यूनान का प्रधान आएगा। दानिय्येल 10:20.

गैब्रियल दानिय्येल को याद दिलाता है कि उसने चौदहवें पद में कहा था कि वह यह समझ देने आया था कि अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा पर क्या घटित होगा, और वह अपेक्षा करता था कि दानिय्येल भविष्यवाणी के इतिहास की आगे आने वाली प्रस्तुति को उसी संदर्भ में रखे। दानिय्येल ने जिस दिन से विलाप करना आरम्भ किया, उसी प्रथम दिन से वह एक विशिष्ट समझ की खोज में था।

तब उसने मुझसे कहा, हे दानिय्येल, मत डर; क्योंकि जिस दिन से तू ने समझने का मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन किया, उसी दिन से तेरी बातें सुनी गईं, और मैं तेरी बातों के कारण आया हूँ। परन्तु पारस के राज्य के प्रधान ने मुझे इक्कीस दिन तक रोके रखा; तब देखो, प्रधान सरदारों में से एक मीकाएल मेरी सहायता करने आया, और मैं वहाँ पारस के राजाओं के साथ ठहर गया। दानिय्येल 10:12, 13.

दानिय्येल के तीन सप्ताह के शोक के बाद, उसे मसीह का दर्शन हुआ, जो भविष्यवाणी के अनुसार पटमोस में यूहन्ना को हुए मसीह के दर्शन से मेल खाता था।

स्वयं परमेश्वर का पुत्र ही दानिय्येल के सामने प्रकट हुआ। यह वर्णन वैसा ही है जैसा यूहन्ना ने दिया था, जब पटमोस के द्वीप पर मसीह उसे प्रकट हुए थे। अब हमारे प्रभु एक अन्य स्वर्गदूत के साथ आते हैं ताकि दानिय्येल को सिखाएँ कि अंतिम दिनों में क्या घटित होगा। यह ज्ञान दानिय्येल को दिया गया और प्रेरणा से हमारे लिए लिपिबद्ध किया गया, हम जिन पर संसार का अंत आ पहुँचा है।

विश्व के उद्धारकर्ता द्वारा प्रकट की गई महान सच्चाइयाँ उन्हीं के लिए हैं जो सत्य को छिपे हुए खज़ानों के समान खोजते हैं। दानियेल एक वृद्ध पुरुष था। उसका जीवन एक अन्यधर्मी दरबार के आकर्षणों के बीच बीता था, उसका मन एक महान साम्राज्य के मामलों में उलझा हुआ था; तथापि वह इन सब से हटकर परमेश्वर के सामने अपने प्राण को दीन करता है और परमप्रधान के उद्देश्यों का ज्ञान खोजता है। और उसकी विनितियों के उत्तर में, अंतिम दिनों में रहने वालों के लिए स्वर्गीय दरबारों से प्रकाश प्रेषित किया गया। तो फिर, हमें कितनी गंभीरता से परमेश्वर को खोजना चाहिए कि वह हमारी समझ खोल दे, जिससे हम स्वर्ग से हमारे पास लाई गई सच्चाइयों को समझ सकें।

'और मैंने, दानियेल ने, अकेले ही वह दर्शन देखा; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे उन्होंने वह दर्शन नहीं देखा; परन्तु उन पर बड़ा कम्पन छा गया, इस कारण वे छिपने के लिए भाग गए.... और मुझ में कोई बल न रहा; क्योंकि मेरा रूप-लावण्य मेरे भीतर भ्रष्टता में बदल गया, और मुझ में कोई शक्ति न रही।' जो वास्तव में पवित्र किए गए हैं, हर एक का यही अनुभव होगा। मसीह की महानता, महिमा और परिपूर्णता का उनका दर्शन जितना अधिक स्पष्ट होगा, वे अपनी कमजोरी और अपूर्णता को उतनी ही तीव्रता से देखेंगे। अपने को निष्पाप ठहराने की उनमें कोई प्रवृत्ति न होगी; जो बात उन्हें अपने में सही और मनोहर प्रतीत होती रही है, वह मसीह की पवित्रता और महिमा की तुलना में केवल अयोग्य और भ्रष्ट ही दिखाई देगी। जब मनुष्य परमेश्वर से अलग हो जाते हैं, जब उनके लिए मसीह का दर्शन बहुत धुंधला होता है, तब वे कहते हैं, 'मैं निष्पाप हूँ; मैं पवित्र किया गया हूँ।'

"तब गब्रियल नबी के पास प्रकट हुआ, और इस प्रकार उससे कहा; 'हे दानियेल, अत्यन्त प्रिय मनुष्य, जो वचन मैं तुझ से कहता हूँ उन्हें समझ, और सीधा खड़ा हो; क्योंकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ। और जब उसने यह वचन मुझ से कहा, तब मैं काँपता हुआ खड़ा हो गया। तब उसने मुझ से कहा, मत डर, दानियेल; क्योंकि जिस पहले दिन से तू समझने को अपने मन में ठाना, और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, तेरे वचन सुन लिए गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आया हूँ।"

दानियेल को स्वर्ग की महिमा ने कितना महान सम्मान दिया! उसने अपने काँपते हुए दास को सांत्वना दी, और उसे यह आश्वासन दिया कि उसकी प्रार्थना स्वर्ग में सुन ली गई है, और कि उस उत्कट विनती के उत्तर में स्वर्गदूत गैब्रियल को फारसी राजा के हृदय को प्रभावित करने के लिए भेजा गया। उन तीन सप्ताहों के दौरान, जब दानियेल उपवास और प्रार्थना कर रहा था, उस सम्राट ने परमेश्वर की आत्मा की प्रेरणाओं का विरोध किया था; परन्तु स्वर्ग का राजकुमार, महादूत माइकल, उस हठी राजा का हृदय फेर देने के लिए भेजा गया, ताकि वह दानियेल की प्रार्थना के उत्तर में कोई निर्णायक कदम उठाए।

'और जब उसने मुझसे ऐसे वचन कहे, तो मैंने अपना मुख भूमि की ओर कर लिया, और मैं मूक हो गया। और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के समान एक ने मेरे होंठों को छुआ.... और कहा, हे अत्यन्त प्रिय पुरुष, मत डर: तुझे शान्ति हो; बलवान बनो, हाँ, बलवान बनो। और जब उसने मुझसे कहा, तब मैं बल पाया और कहा, मेरे प्रभु बोलें; क्योंकि तूने मुझे बल दिया है।' दानियेल पर जो दिव्य महिमा प्रकट हुई वह इतनी महान थी कि वह उस दृश्य को सहन न कर सका। तब स्वर्ग के दूत ने अपनी उपस्थिति की ज्योति को ढँक लिया और नबी के सामने 'मनुष्यों के पुत्रों के समान एक' के रूप में प्रकट हुआ। अपनी दिव्य सामर्थ्य से उसने इस सत्यनिष्ठ और विश्वासयोग्य पुरुष को इतना दृढ़ किया कि वह परमेश्वर की ओर से उसे भेजा गया संदेश सुन सके।

दानियेल सर्वोच्च परमेश्वर के एक समर्पित सेवक थे। उनका दीर्घ जीवन अपने स्वामी की सेवा के श्रेष्ठ कार्यों से परिपूर्ण था। उनके चरित्र की पवित्रता और अडिग निष्ठा के समकक्ष केवल उनके हृदय की विनम्रता और परमेश्वर के सामने उनका पश्चाताप ही है। हम पुनः कहते हैं, दानियेल का जीवन सच्चे पवित्रीकरण का एक दैवी-प्रेरित उदाहरण है। रिव्यू एंड हेराल्ड, 8 फरवरी, 1881.

दसवें अध्याय में दानियेल का अनुभव, अन्त के दिनों में परमेश्वर की प्रजा का प्रतिनिधित्व करता है, जो दानियेल और यूहन्ना की तरह, यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य को समझते हैं। दानियेल के अनुभव को उस भविष्यसूचक इतिहास में, जहाँ वह घटित होता है, ठीक स्थान देने की कुंजी इस तथ्य पर आधारित है कि वह शोक में था, और यह

कि इक्कीस दिनों के समापन पर मिकाएल भेजा गया था। पहली आयत में दानिय्येल लिखता है कि उसे भविष्यवाणी के आंतरिक और बाह्य दोनों दर्शनों की समझ थी। इक्कीस दिनों से पहले दोनों दर्शनों के विषय में दानिय्येल की समझ अपूर्ण थी, परन्तु गब्रिएल की व्याख्या के साथ दानिय्येल 'वस्तु' और 'दर्शन' को भिन्न प्रकाशनों के रूप में पूरी तरह समझ लेता है।

जैसे ही सत्तर वर्षों के बंदिवास के समाप्त होने का समय निकट आया, दानिय्येल यिर्मयाह की भविष्यवाणियों के बारे में गहराई से विचार करने लगा। उसने देखा कि वह समय निकट है जब परमेश्वर अपनी चुनी हुई प्रजा को फिर एक परीक्षा देगा; और उपवास, दीनता और प्रार्थना के साथ, उसने इस्राएल के लिए स्वर्ग के परमेश्वर से इन शब्दों में गिड़गिड़ाकर विनती की: 'हे प्रभु, महान और भयानक परमेश्वर, जो उससे प्रेम रखने वालों और उसकी आज्ञाओं का पालन करने वालों के साथ वाचा और करुणा बनाए रखता है; हमने पाप किया है, अधर्म किया है, दुष्टता की है, और विद्रोह किया है, अर्थात् तेरे उपदेशों और तेरे न्यायों से हट गए हैं; और न हमने तेरे दास भविष्यद्वक्ताओं की सुनी, जिन्होंने तेरे नाम से हमारे राजाओं, हमारे प्रधानों, हमारे पितरों और देश के सब लोगों से कहा।'

इन शब्दों पर ध्यान दें। दानिय्येल प्रभु के सामने अपनी स्वयं की निष्ठा की घोषणा नहीं करता। अपने को शुद्ध और पवित्र ठहराने के बजाय, वह अपने को इस्राएल के वास्तव में पापी लोगों के साथ जोड़ता है। जो बुद्धि परमेश्वर ने उसे प्रदान की थी, वह संसार के ज्ञानियों की बुद्धि से उतनी ही अधिक श्रेष्ठ थी, जितना कि आकाश में दोपहर के समय चमकते सूर्य का प्रकाश सबसे दुर्बल तारे की चमक से अधिक तेज होता है। फिर भी, स्वर्ग से अत्यधिक अनुग्रह पाए इस मनुष्य के मुख से निकली प्रार्थना पर विचार कीजिए। गहन दीनता, आँसुओं और हृदय-विदारक पीड़ा के साथ वह अपने लिए और अपनी प्रजा के लिए विनती करता है। वह परमेश्वर के सामने अपनी आत्मा उधाड़ देता है, अपनी ही निकृष्टता का अंगीकार करता है, और प्रभु की महानता तथा महिमा को मानता है।

उसकी प्रार्थनाओं में कैसी गंभीरता और उत्कटता है! वह परमेश्वर के और भी निकट आता जा रहा है। विश्वास का हाथ ऊपर उठकर परमप्रधान की कभी न विफल होने वाली प्रतिज्ञाओं को थाम लेता है। उसकी आत्मा वेदना में जूझ रही है। और उसे यह प्रमाण है कि उसकी प्रार्थना सुन ली गई है। उसे अनुभव होता है कि विजय उसी की है। यदि हम एक समुदाय के रूप में दानिएल की तरह प्रार्थना करें और उसी की तरह जूझें, अपनी आत्माओं को परमेश्वर के सामने नम्र करें, तो हमें भी अपनी प्रार्थनाओं के उतने ही स्पष्ट उत्तर मिलेंगे, जितने दानिएल को दिए गए थे। सुनो, स्वर्गीय दरबार में वह अपना मामला किस प्रकार जोर देकर प्रस्तुत करता है:

'हे मेरे परमेश्वर, अपना कान लगा और सुन; अपनी आँखें खोल और हमारी उजड़ी हुई दशा को देख, और उस नगर को भी जो तेरे नाम से कहलाता है; क्योंकि हम अपनी धार्मिकता के कारण अपनी विनतियाँ तेरे सामने नहीं रखते, परन्तु तेरी बड़ी दयाओं के कारण रखते हैं। हे प्रभु, सुन; हे प्रभु, क्षमा कर; हे प्रभु, ध्यान दे और कर; विलंब न कर, अपने ही निमित्त, हे मेरे परमेश्वर; क्योंकि तेरा नगर और तेरी प्रजा तेरे नाम से कहलाते हैं। और जब मैं बोल रहा था और प्रार्थना कर रहा था, और अपने पाप और अपनी प्रजा के पाप को स्वीकार कर रहा था, ... तभी वही पुरुष गब्रिएल, जिसे मैंने प्रारंभ में दर्शन में देखा था, वेग से उड़ता हुआ, संध्याकालीन भेंट के समय के आसपास उसने मुझे छुआ।'

जैसे ही दानिय्येल की प्रार्थना उठ रही थी, स्वर्गीय प्रांगणों से स्वर्गदूत गब्रिएल तीव्र वेग से नीचे उतर आता है, यह बताने के लिए कि उसकी प्रार्थनाएँ सुन ली गई हैं और उनका उत्तर दिया गया है। इस पराक्रमी स्वर्गदूत को उसे बुद्धि और समझ देने, और उसके सामने आने वाले युगों के रहस्यों को खोल देने के लिए नियुक्त किया गया था। इस प्रकार, जब वह सत्य को जानने और समझने की लगन से खोज कर रहा था, दानिय्येल स्वर्ग के नियुक्त दूत के साथ संगति में लाया गया।

"परमेश्वर का जन प्रार्थना कर रहा था, आनंदमय भावनाओं के उफान के लिए नहीं, बल्कि दिव्य इच्छा के ज्ञान के लिए। और वह यह ज्ञान केवल अपने लिए नहीं, बल्कि अपनी प्रजा के लिए चाहता था। उसका बड़ा बोझ

इसाएल के लिए था, जो सख्ततम अर्थ में परमेश्वर की व्यवस्था का पालन नहीं कर रहे थे। वह स्वीकार करता है कि उनकी सारी विपत्तियाँ उस पवित्र व्यवस्था के उल्लंघनों के परिणामस्वरूप उन पर आई हैं। वह कहता है, 'हमने पाप किया है, हमने दुष्टता की है.... क्योंकि हमारे पापों और हमारे पितरों के अधर्म के कारण, यरूशलेम और तेरी प्रजा हमारे चारों ओर के सब लोगों के लिए तिरस्कार का विषय बन गए हैं।' वे परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा के रूप में अपना विशिष्ट, पवित्र चरित्र खो चुके थे। 'इसलिए अब, हे हमारे परमेश्वर, अपने दास की प्रार्थना और उसकी विनतियाँ सुन, और अपने उस पवित्रस्थान पर, जो उजाड़ पड़ा है, अपना मुख चमका दे।' दानियेल का हृदय परमेश्वर के उजाड़ पवित्रस्थान की ओर तीव्र लालसा के साथ मुड़ता है। वह जानता है कि उसकी समृद्धि केवल तब पुनर्स्थापित हो सकती है जब इसाएल परमेश्वर की व्यवस्था के अपने उल्लंघनों के लिए पश्चाताप करें, और नम्र, विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी बन जाएँ."

उसकी प्रार्थना के उत्तर में, दानियेल को न केवल वह प्रकाश और सत्य मिला जिसकी उसे और उसके लोगों को सबसे अधिक आवश्यकता थी, बल्कि भविष्य की महान घटनाओं का भी दर्शन मिला, यहाँ तक कि संसार के उद्धारकर्ता के आगमन तक। जो लोग अपने को पवित्र ठहराया हुआ बताते हैं, परन्तु न तो पवित्र शास्त्रों की खोज करना चाहते हैं, और न ही बाइबल के सत्य की अधिक स्पष्ट समझ के लिए प्रार्थना में परमेश्वर से जूझना चाहते हैं, वे नहीं जानते कि सच्चा पवित्रीकरण क्या है।

जो भी हृदय से परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हैं, वे उसकी इच्छा का ज्ञान पाने के लिए भूखे-प्यासे होंगे। परमेश्वर सत्य के उद्गाता हैं। वह अंधकारमय समझ को प्रकाशित करता है, और मनुष्य के मन को उन सत्यों को ग्रहण करने और समझने की सामर्थ्य देता है जिन्हें उसने प्रकट किया है।

दानियेल ने परमेश्वर से बात की। उसके सामने स्वर्ग खुल गया था। परन्तु उसे प्रदान किए गए उच्च सम्मान, विनम्रता और एकनिष्ठ, गंभीर खोज का परिणाम था। वह यह नहीं सोचता था, जैसा कि आजकल बहुत-से लोग सोचते हैं, कि यदि हम केवल ईमानदार हों और यीशु से प्रेम करें, तो हम क्या मानते हैं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यीशु के प्रति सच्चा प्रेम इस बात की अत्यंत गहन और एकनिष्ठ जाँच-पड़ताल की ओर ले जाएगा कि सत्य क्या है। मसीह ने प्रार्थना की कि उसके चेले सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएँ। जो व्यक्ति सत्य के लिए चिंतित, प्रार्थनापूर्ण खोज करने में इतना आलसी है, उसे ऐसी भ्रांतियाँ स्वीकार करने के लिए छोड़ दिया जाएगा जो उसकी आत्मा के नाश का कारण सिद्ध होंगी।

"गैब्रियल के आगमन के समय, नबी दानियेल आगे की शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ था; परन्तु कुछ वर्षों बाद, उन विषयों के बारे में, जो अभी तक पूरी तरह समझाए नहीं गए थे, अधिक जानने की इच्छा से, उसने फिर से परमेश्वर से प्रकाश और बुद्धि मांगने का निश्चय किया। 'उन दिनों मैं, दानियेल, तीन पूरे सप्ताह शोक करता रहा। मैंने कोई स्वादिष्ट रोटी नहीं खाई, न मांस और न ही दाखरस मेरे मुँह में गई, और मैंने तन पर बिलकुल तेल भी नहीं लगाया.... तब मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा, और क्या देखता हूँ, सन के वस्त्र पहने एक व्यक्ति खड़ा था, जिसकी कमर ऊफाज़ के उत्तम सोने से कसी हुई थी। उसका शरीर भी बेरिल के समान था, उसका मुख बिजली की चमक के समान, और उसकी आँखें आग के दीपकों के समान; और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव रंग में चमकाए हुए पीतल के समान थे; और उसके वचनों की आवाज़ बहुतों की आवाज़ के समान थी।'"

"स्वयं परमेश्वर का पुत्र ही दानियेल के सामने प्रकट हुआ। यह वर्णन वैसा ही है जैसा यूहन्ना ने दिया जब मसीह पट्मोस के द्वीप पर उस पर प्रकट हुए। अब हमारे प्रभु एक अन्य स्वर्गीय दूत के साथ आते हैं ताकि दानियेल को सिखाएँ कि अंतिम दिनों में क्या घटित होगा। यह ज्ञान दानियेल को दिया गया और हमारे लिए, जिन पर युगों का अन्त आ पहुँचा है, प्रेरणा से लिख लिया गया।" रिच्यू एंड हेराल्ड, 8 फरवरी, 1881.

यह व्याख्या, जिसे गब्रिएल, "स्वर्ग का नियुक्त दूत," दानियेल के पास ला रहा था, उसी व्याख्या की परिपूर्ति थी, जिसे उसने अध्याय नौ में दानियेल को देना आरम्भ किया था। "पंक्ति पर पंक्ति" की कार्यविधि यह अपेक्षा करती है कि हम अध्याय नौ और दस—दोनों की व्याख्या तथा उनसे संबद्ध परिस्थितियों को—एक साथ समन्वित करें, ताकि भविष्यद्वाणी संबंधी चित्रण का यथार्थ विभाजन कर सकें। इसी व्याख्या में ऊलाई और हिद्देकेल नदियों के दर्शन एक

हो जाते हैं।

दानिय्येल ने यिर्मयाह और मूसा की पुस्तकों से यह समझ लिया था कि परमेश्वर की प्रजा का उद्धार निकट है। इस प्रकार, दानिय्येल उन अन्तिम दिनों की परमेश्वर की प्रजा का प्रतिनिधित्व करता है जो यह समझते हैं कि परमेश्वर की प्रजा का अन्तिम उद्धार निकट है। वे अन्तिम दिनों के लोग यह पहचानेंगे कि वे आत्मिक रूप से तितर-बितर कर दिए गए हैं, जैसा कि दानिय्येल के द्वारा दर्शाया गया है, जिसे बाबुल में सत्तर वर्षों की बंधुआई के दासत्व में ले जाया गया था। तब वे समझेंगे कि, दानिय्येल की तरह, उन्हें अपनी तितर-बितर अवस्था के प्रति ऐसी प्रतिक्रिया अपनानी चाहिए जो लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस के "सात गुना" द्वारा दर्शाए गए उपाय से मेल खाती हो।

जब दानिय्येल द्वारा दर्शाई गई, और लैव्यव्यवस्था 26 में निर्धारित उपाय द्वारा अपेक्षित, नम्रता का अनुभव अन्तिम दिनों में प्रकट होगी, तब परमेश्वर के अन्तिम समय के लोग एक निश्चित अवधि तक शोक मना चुके होंगे। वह समयावधि तब समाप्त होती है जब प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल अवतरित होता है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

और तुम अन्यजातियों के बीच नाश हो जाओगे, और तुम्हारे शत्रुओं का देश तुम्हें निगल जाएगा। और तुम में से जो बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओं के देशों में अपनी अधर्मता के कारण घुलते रहेंगे; और अपने पितरों की अधर्मताओं के कारण भी वे उनके संग घुलते रहेंगे। यदि वे अपनी अधर्मता और अपने पितरों की अधर्मता को, उस अपराध सहित जो उन्होंने मेरे विरुद्ध किया, मान लें, और यह भी कि वे मेरे विरोध में चले हैं; और कि मैं भी उनके विरोध में चला और उन्हें उनके शत्रुओं के देश में ले आया; तब यदि उनका खतना न किया हुआ हृदय दीन हो, और वे अपने अधर्म के दण्ड को स्वीकार करें; तब मैं याकूब के साथ अपनी वाचा को स्मरण करूंगा, और इसहाक की वाचा को भी, और इब्राहीम की वाचा को भी स्मरण करूंगा; और मैं उस देश को स्मरण करूंगा। वह भूमि भी उनसे खाली हो जाएगी, और उनके बिना उजाड़ पड़ी हुई अपने सब्तों का भोग करेगी; और वे अपने अधर्म के दण्ड को स्वीकार करेंगे; क्योंकि उन्होंने मेरे न्यायों को तुच्छ जाना, और उनके प्राण ने मेरी विधियों से घृणा की। तोभी यह सब होते हुए भी, जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे, तब मैं न उन्हें तज दूंगा, न उनसे घृणा करूंगा कि उन्हें सर्वथा नाश कर दूं और उनके साथ अपनी वाचा तोड़ दूं; क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहीवा हूँ। परन्तु मैं उनके कारण उनके पूर्वजों की वाचा को स्मरण करूंगा, जिन्हें मैं अन्यजातियों के देखते मिस्र देश से निकाल लाया था, कि मैं उनका परमेश्वर बनूं; मैं यहीवा हूँ। लैव्यव्यवस्था 26:38-45.